International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 25-05-2025, Accepted: 24-06-2025, Published: 28-07-2025
Volume 11, Issue 3, 2025, Page No. 30-33

प्रेमचंद की कहानियों में सामाजिक यथार्थ का चित्रण: एक समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ. आनंद कुमार कश्यप
सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, शासकीय पातालेश्वर महाविद्यालय, मस्तुरी, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

सारांश
मुंशी प्रेमचंद हिंदी कथा साहित्य के ऐसे पुरोधा लेखक हैं, जिन्होंने अपने लेखन के माध्यम से भारतीय समाज की जटिलताओं, विरोधाभासों और यथार्थ को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से चित्रित किया। प्रस्तुत शोध में उनकी चार प्रमुख कहानियाँ क्रमशः पंच परमे वर, ईदगाह, बड़े घर की बेटी और कफ़न का चयन किया गया है। इन कहानियों का गहन विश्लेषण करते हुए शोधार्थी ने यह स्पष्ट किया है कि प्रेमचंद का साहित्य केवल कल्पना या मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना का संवाहक है। पंच परमे वर में न्याय और निष्पक्षता की महत्ता को उभारा गया है, जो पंचायत व्यवस्था की नैतिक नींव को दर्शाता है। ईदगाह में एक बालक की संवेदनशीलता, त्याग और पारिवारिक मूल्यों की गहन अभिव्यक्ति है। बड़े घर की बेटी में स्त्री चेतना, आत्मसम्मान और पारिवारिक मर्यादा के द्वंद्व को अत्यंत संयमित शैली में उकेरा गया है। कफ़न कहानी गरीबी से उत्पन्न नैतिक क्षरण और सामाजिक विडंबना का कटु यथार्थ प्रस्तुत करती है। यह शोध वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है, जिसमें प्राथमिक स्रोत के रूप में प्रेमचंद की मूल कहानियाँ और द्वितीयक स्रोतों के रूप में आलोचनात्मक ग्रंथ, शोध आलेख तथा समीक्षाएँ सम्मिलित हैं। शोध का उद्देश्य प्रेमचंद की कहानियों में प्रतिफलित सामाजिक यथार्थ को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समझना और साहित्य को सामाजिक दर्पण के रूप में स्थापित करना है।

मूल शब्दः प्रेमचंद, पंच परमे वर, ईदगाह, बड़े घर की बेटी, कफ़न, सामाजिक यथार्थ, न्याय, नैतिकता, साहित्यिक समीक्षा।

परिचय
हिंदी साहित्य में प्रेमचंद का स्थान एक जनकथा–लेखक के रूप में अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। उन्होंने तत्कालीन भारतीय समाज की जटिलताओं जैसे सामाजिक असमानता, निर्धनता, जातीय भेदभाव, महिला शोषण, और धार्मिक पाखंड को अपनी कहानियों का विषय बनाया।[1] उनकी रचनाएँ केवल मनोरंजन के साधन नहीं रहीं, बल्कि समाज के यथार्थ चित्रण की जीवंत मिसाल हैं। प्रेमचंद का साहित्य मानवीय मूल्यों, सामाजिक चेतना और संवेदनशील दृष्टिकोण से ओतप्रोत है, जो पाठक को न केवल विचारशील बनाता है, बल्कि समाज की सच्चाई से भी रूबरू कराता है।[2]
सत्य हिंदी पत्रिका में छपे लेख के अनुसार प्रेमचंद की रचनात्मक यात्रा उर्दू से आरंभ हुई, जहाँ वे ष्नवाब रायष् नाम से लिखते थे।[3], लेकिन बाद में उन्होंने हिंदी को अपनी अभिव्यक्ति का प्रमुख माध्यम बनाया। उन्होंने कथा साहित्य को सामाजिक उद्देश्य की पूर्ति का सशक्त साधन मानते हुए लिखा। उनकी भाषा आम बोलचाल की थी, जिससे पाठक सहजता से जुड़ पाता था। उनकी कहानियों में गांधीवादी आदर्श, समाजवादी दृष्टिकोण और भारतीय ग्रामीण जीवन की मार्मिकता दिखाई देती है। वे केवल लेखक नहीं थे, बल्कि एक समाजशास्त्री भी थे जिन्होंने लेखनी के माध्यम से सामाजिक चेतना को जागृत किया। उनकी कहानियाँ नीतिपरक, शिक्षाप्रद और यथार्थपरक होती थीं, जिनमें आदर्शवाद का सुंदर समावेश देखने को मिलता है।
प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई 1880 को उत्तर प्रदेश के वाराणसी जिले के लमही गाँव में हुआ।[4] उनके पिता अजायब राय डाक विभाग में काम करते थे और माता अनंत देवी धार्मिक विचारों वाली महिला थीं। प्रेमचंद की प्रारंभिक शिक्षा गांव के मदरसे में हुई, जहाँ उन्होंने उर्दू और फारसी पढ़ीं। बाद में वे वाराणसी के मिशन स्कूल और काशी हिंदू वि वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त कर शिक्षण कार्य में लगे। उन्होंने जीवनभर लेखन और सामाजिक चेतना के माध्यम से समाज में बदलाव लाने का प्रयास किया। उनकी कहानियों और उपन्यासों ने किसानों, मजदूरों, महिलाओं और दलितों के जीवन को साहित्य में स्थान दिया। वे सामाजिक कुरीतियों और अंधवि वासों के प्रबल विरोधी थे और अपने लेखन के माध्यम से जनता में जागरूकता उत्पन्न करते थे।[4] प्रेमचंद ने स्वतंत्रता संग्राम के विचारों को भी अपनी रचनाओं में समाहित किया और लोगों को देशभक्ति की प्रेरणा दी।
प्रेमचंद की कहानियाँ घटनाओं का ज्यों–का–त्यों विवरण नहीं हैं, बल्कि वे यथार्थ और आदर्श के संतुलित संगम से गढ़ी गई हैं। उन्होंने कथा साहित्य को सामाजिक परिवर्तन का औजार बनाया और हिंदी कहानी को निश्चित परिप्रेक्ष्य और कलात्मक आधार प्रदान किया। उनकी कहानियाँ वातावरण, पात्र और संवाद के माध्यम से एक जीवंत समाज की रचना करती हैं। यही कारण है कि प्रेमचंद आज भी प्रासंगिक हैं और उनकी कहानियाँ वर्तमान सामाजिक परिवेश को समझने में सहायक हैं। प्रेमचंद ने अपने जीवन के अंतिम दिनों में गंभीर बीमारी का सामना किया और 8 अक्टूबर 1936 को उनका निधन हो गया, लेकिन उनका साहित्य आज भी समाज को दिशा देने वाला प्रकाशस्तंभ बना हुआ है।

सामग्री और बिधियाँ (अनुसंधान पद्धति)
यह शोध वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है, जिसमें मुंशी प्रेमचंद की चयनित कहानियों पंच परमे वर, ईदगाह, बड़े घर की बेटी और कफ़न का क्रमबद्ध अध्ययन किया गया। इन कहानियों का विश्लेषण विषयवस्तु, पात्र–चित्रण, प्रतीकात्मकता, संवाद, सामाजिक परिप्रेक्ष्य और यथार्थवादी दृष्टिकोण के आधार पर किया गया है। साथ ही यह अध्ययन ऐतिहासिक–सामाजिक संदर्भों को ध्यान में रखकर किया गया है, जिससे यह स्पष्ट किया जा सके कि प्रेमचंद के समय की सामाजिक समस्याएँ आज के परिवेश में किस रूप में विद्यमान हैं।
शोध में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों स्त्रोतों का प्रयोग किया गया। प्राथमिक स्रोत के रूप में प्रेमचंद की मूल कहानियाँ ली गईं, जबकि द्वितीयक स्रोतों में प्रेमचंद पर आधारित आलोचनात्मक ग्रंथ, शोधपत्र, हिंदी अकादमिक पत्रिकाएँ तथा ऑनलाइन शोध आलेख सम्मिलित हैं। अध्ययन उद्देश्यात्मक चयन विधि पर आधारित है, जिसमें प्रेमचंद की सैकड़ों कहानियों में से उन चार कहानियों का चयन किया गया जो सामाजिक यथार्थ को विविध

स्तरों पर चित्रित करती हैं। पंच परमे वर में न्याय व्यवस्था और अंतरात्मा की पुकार, ईदगाह में बाल मनोविज्ञान और पारिवारिक त्याग, बड़े घर की बेटी में स्त्री चेतना और पारिवारिक प्रतिष्ठा तथा कफ़न में गरीबी, नैतिक पतन और सामाजिक विडंबना को प्रमुख विषय बनाया गया है।

डेटा संकलन की प्रक्रिया में प्रेमचंद की प्रकाशित रचनाओं का पाठ–विश्लेषण किया गया। साथ ही विभिन्न शोध–पत्रिकाओं, समाचार स्त्रोतों एवं पुस्तकालय अभिलेखों से समीक्षात्मक सामग्री एकत्र की गई। समस्त डेटा का संकलन पाठ–आधारित समीक्षा एवं तुलनात्मक दृष्टिकोण से किया गया है। कहानियों का विश्लेषण विषय–आधारित संरचना, चरित्र विश्लेषण, संवाद और प्रतीकों की व्याख्या तथा सामाजिक यथार्थ के विभिन्न पक्षों के संदर्भ में किया गया। प्रत्येक कहानी को उसके मुख्य सामाजिक मुद्दे के आधार पर वर्गीकृत किया गया और उसमें निहित सामाजिक संदेश को उसके पात्रों, कथ्य, शैली, भाषा एवं प्रतीकों के माध्यम से समझने का प्रयास किया गया। साथ ही यह भी विवेचना की गई कि प्रेमचंद का यथार्थवादी दृष्टिकोण आज के समाज में कितना प्रभावशाली और प्रासंगिक है।

परिणाम

वर्तमान शोध की समीक्षा व विश्लेषण प्रस्तुत है। प्रेमचंद की प्रसिद्ध कहानियाँ जैसे पंच परमे वर, ईदगाह, बड़े घर की बेटी और कफ़न न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि वे समाज की जमीनी हकीकत को प्रतिबिंबित करती हैं। पंच परमे वर में पंचायत और न्याय की मर्यादा को दर्शाया गया है, जहाँ मित्रता और निष्पक्षता के बीच संघर्ष दिखता है। ईदगाह एक बालक की संवेदनशीलता और त्याग की भावना को मार्मिक ढंग से प्रस्तुत करती है। बड़े घर की बेटी में स्त्री के आत्मसम्मान और पारिवारिक प्रतिष्ठा के द्वंद्व को दर्शाया गया है, वहीं कफ़न में गरीबी के कारण उत्पन्न संवेदनहीनता और सामाजिक विडंबना को अत्यंत प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत किया गया है। इन कहानियों के पात्र आम जनजीवन से लिए गए हैं, जो पाठकों को कहानी से आत्मसात कर देते हैं।

पंच परमे वर (न्याय और अंतरात्मा की पुकार)

प्रेमचंद की यह कहानी ग्रामीण भारत के न्याय–प्रणाली और मित्रता की परीक्षा को दर्शाती है। कहानी में जुम्मन शेख और अल्गु चौधरी दो घनिष्ठ मित्र हैं, जब जुम्मन की बुआ न्याय के लिए पंचायत में जाती है और अल्गु पंच चुने जाते हैं, तब न्याय और मित्रता के बीच संघर्ष पैदा होता है। अल्गु चौधरी का संवादकृष्पंच के मुंह से खुदा बोलता हैष्कृकहानी के नैतिक पक्ष को दर्शाता है।[4,5] यहाँ प्रेमचंद यह स्थापित करते हैं कि सच्चा न्याय वह है जो व्यक्तिगत संबंधों से ऊपर उठकर निष्पक्षता से दिया जाए। यह कहानी हमें यह सिखाती है कि पंचायत व्यवस्था यदि ईमानदारी से चले तो समाज में वि वास और न्याय की स्थापना संभव है।

मुख्य पात्र

1. अल्गु चौधरी – न्यायप्रिय व्यक्ति
2. जुम्मन शेख – स्वार्थी लेकिन अंततः परिवर्तनशील
3. बुआ – अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने वाली वृद्ध महिला

कफ़न (गरीबी, नैतिक क्षरण और सामाजिक विडंबना)

''कफ़न'' प्रेमचंद की सबसे तीखी और विडंबनात्मक कहानियों में से एक है, जो मानव स्वभाव के क्रूर यथार्थ को उजागर करती है। इस कहानी में घीसू और माधव जैसे पात्र उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो सामाजिक शोषण, बेरोजगारी और दैन्य के कारण संवेदनहीन हो चुका है और जब माधव की पत्नी प्रसव के समय मर जाती है, तो पिता–पुत्र कफ़न के लिए मिले पैसों से शराब पीने चले जाते हैं।[4] यह क्षण केवल नैतिक पतन का नहीं बल्कि एक ऐसी सामाजिक संरचना का चित्रण है जहाँ गरीबी ने इंसानियत को मार दिया है।

स्वादः ''हम'' भी तो चिताओं पर बैठने वाले हैं, क्यों न कुछ जी लें? यह कथन कहानी के कटु व्यंग्य को रेखांकित करता है।

मुख्य पात्र

1. घीसू – वृद्ध, अकर्मण्य और व्यंग्यात्मक बुद्धि का धनी
2. माधव – युवा, लेकिन पिता के पदचिह्नों पर चलने वाला

बड़े घर की बेटी (पारिवारिक प्रतिष्ठा बनाम स्त्री का आत्मसम्मान)

यह कहानी एक गृहस्थ जीवन के भीतर स्त्री की स्थिति और सम्मान की तलाश को उजागर करती है। अनूठी एक उच्च वर्गीय घर की बेटी है, जिसकी शादी एक मध्यमवर्गीय परिवार में होती है। जब वह अपने पति सरयू से झगड़ कर मायके चली जाती है, तब उसका पिता उसे यह सिखाता है कि स्त्री को अपने घर का मान बढ़ाना चाहिए।4 प्रेमचंद यहाँ यह दर्शाते हैं कि स्त्री केवल सौंदर्य या विवाह की वस्तु नहीं, बल्कि घर की मर्यादा और संस्कृति की वाहक है। कहानी में स्त्री–सशक्तिकरण का गहरा संकेत है, जहाँ अनूठी अंततः आत्मावलोकन कर अपने ससुराल लौटती है, लेकिन यह लौटना समर्पण नहीं, बल्कि सामाजिक समझदारी का प्रतीक है।

मुख्य पात्र

1. अनूठी – आत्मसम्मानशील, भावुक लेकिन विवेकशील
2. सरयू – संयमी, परंपरागत ग्रामीण पुरुष
3. अनूठी का पिता – अनुभवशील, सामाजिक मूल्यों का संरक्षक

ईदगाह (बालमन की संवेदना और त्याग)

'ईदगाह' प्रेमचंद की अत्यंत मार्मिक कहानी है जिसमें हमीद नामक एक अनाथ बालक ईद के मेले में अपनी दादी के लिए चिमटा खरीदता है, जबकि अन्य बच्चे खिलौने, मिठाइयाँ खरीदते हैं। यह त्याग, प्रेम और भारतीय पारिवारिक मूल्यों की कथा है।4 प्रेमचंद ने हमीद के माध्यम से यह दिखाया है कि सच्चा प्रेम त्याग में निहित होता है। हमीद का संवाद – ''दादी के हाथ जल जाते हैं, इसलिए चिमटा लिया'' यह भारतीय बालक की भावनात्मक परिपक्वता का उदाहरण है।

मुख्य पात्र

1. हमीद – संवेदनशील, जिम्मेदार बालक
2. दादी अमीना – ममता और स्नेह की प्रतिमूर्ति

चर्चा

स्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य प्रेमचंद की कहानियों में चित्रित यथार्थवाद, सामाजिक चेतना एवं मानवीय मूल्यों का विश्लेषण करना है।[7] प्रेमचंद का साहित्य केवल रचनात्मक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का सशक्त माध्यम रहा है। उन्होंने अपने कथा साहित्य के माध्यम से भारतीय समाज की विभिन्न समस्याओं जैसे निर्धनता, जातिवाद, नारी–शोषण, वर्ग–संघर्ष और धार्मिक पाखंड को जिस संवेदनशीलता और यथार्थ दृष्टि से उकेरा है, वह हिंदी साहित्य को नया सामाजिक आयाम प्रदान करता है।[7] प्रेमचंद की इन कहानियों में सामाजिक यथार्थ विभिन्न रूपों में प्रकट होता है6 जैसे आर्थिक विषमता जो कफ़न और पंच परमे वर में गरीबों की स्थिति के रूप में दर्शित है। न्याय और नैतिकता जो पंच परमे वर में निष्पक्ष पंचायत की अवधारणा की नींव रखी गयी है। स्त्री की सामाजिक स्थिति जिसे बड़े घर की

बेटी में निष्पक्ष रूप से प्रदर्शित किया गया है। पारिवारिक त्याग और संवेदना जिसे ईदगाह में रेखांकित किया गया है। इस शोध में प्रेमचंद की कहानियों में सामाजिक यथार्थ एवं दलित चेतना के संदर्भ में पूर्ववर्ती साहित्यिक योगदानों को संदर्भित किया गया है। लता (2019) द्वारा लिखित शोध लेख प्रेमचंद की कहानियों में दलित चेतना का विश्लेषण करते हुए यह प्रतिपादित किया गया है कि प्रेमचंद की कहानियाँ न केवल यथार्थ की गहराइयों को उजागर करती हैं, बल्कि उनमें निचले तबके की व्यथा और सामाजिक संघर्ष को भी अभिव्यक्त किया गया है।[8] नीलम एवं मधुबाला (2019) द्वारा लिखित शोधपत्र "हिंदी साहित्य में प्रेमचंद का योगदान" में प्रेमचंद के साहित्यिक योगदान का सम्यक् मूल्यांकन किया गया है।9 लेखिकाओं ने यह दर्शाया है कि प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों और कहानियों के माध्यम से भारतीय समाज की यथार्थवादी तस्वीर प्रस्तुत की। विशेष रूप से ग्रामीण जीवन, किसानों की समस्याएँ, स्त्री–जीवन की पीड़ा, सामाजिक विषमता, धर्म और नैतिकता जैसे विषय उनके लेखन के मूल में हैं। लेख में यह भी उल्लेखनीय है कि प्रेमचंद की कहानियाँ जैसे 'पूस की रात', 'ईदगाह', 'कफन', 'नमक का दरोगा', 'सद्गति', 'ठाकुर का कुआँ', 'बूढ़ी काकी' आदि न केवल समय के अनुरूप हैं, बल्कि आज भी समाज में व्याप्त विसंगतियों और संवेदनाओं को उभारने में सक्षम हैं। इन कहानियों में करुणा, संवेदना, यथार्थ और मानवीय मूल्यों का गहन चित्रण मिलता है, जो उन्हें कालजयी बनाता है। साहित्य कुञ्ज में प्रकाशित डॉ. भवानी दास जी के लेख में उन्होंने प्रेमचंद की कहानियों के "संवेदना तत्त्व" की समीक्षा की है जिसमें उन्होंने लिखा है कि प्रेमचंद की कहानियाँ मानवीय संवेदना की गहराइयों को उजागर करती हैं।[10] वे करुणा, दया, सहानुभूति जैसे उदात्त भावों को साहित्य के माध्यम से सजीव रूप में प्रस्तुत करते हैं। उनके कथा संसार में सामाजिक यथार्थ जैसे अमीरदृगरीब, किसानदृसाहूकार, और शिक्षितदृअशिक्षित वर्गों के अंतर्विरोधों को संवेदनशील दृष्टि से चित्रित किया गया है। प्रारंभिक आदर्शोन्मुखी दृष्टिकोण से हटकर वे यथार्थ की जमीन पर आ टिकते हैं। 'ईदगाह', 'बड़े घर की बेटी', 'ठाकुर का कुँआ', 'नमक का दरोगा', 'पूस की रात', 'नशा', 'बूढ़ी काकी' और 'कफन' जैसी कहानियाँ सामाजिक पीड़ा और आत्मीयता का प्रतिबिंब हैं। इसी कड़ी में आगे डॉ. पीयूष कुमार पारिक द्वारा प्रकाशित लेख प्रेमचन्द की कहानियाँ और यथार्थवाद में यह विश्लेषण किया गया है कि प्रेमचन्द की कहानियाँ केवल भावनात्मक या काल्पनिक जगत तक सीमित नहीं हैं, बल्कि सामाजिक यथार्थ की गहन दृष्टि प्रस्तुत करती हैं।[11] लेख में यह स्पष्ट किया गया है कि प्रेमचन्द की कहानियों जैसे बड़े घर की बेटी, पंच परमे वर, नमक का दरोगा, उधार की कहानी, प्रेम प्रश्न, सवा सेर गेहूं, सच्चाई, पूस की रात और कफन में यथार्थ और संवेदना का उत्कृष्ट समन्वय मिलता है। इन रचनाओं के माध्यम से प्रेमचन्द न केवल सामाजिक विषमताओं को उजागर करते हैं बल्कि उनके यथार्थवादी दृष्टिकोण द्वारा साहित्य को जनसरोकार से जोड़ने का कार्य करते हैं। अतः प्रेमचंद की भाषा सरल है लेकिन उसमें गहराई है। वे प्रतीकों, संवादों और पात्रों के माध्यम से समाज के अंतर्विरोधों को उकेरते हैं। उनका यथार्थवादी दृष्टिकोण आज भी प्रासंगिक है, क्योंकि वर्तमान समाज में भी ये समस्याएं विद्यमान हैं।

निष्कर्ष

प्रेमचंद की कहानियाँ आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं जितनी अपने समय में थीं। उनका साहित्य केवल कथा नहीं, बल्कि समाज का दर्पण है। उनके पात्र आम जनता से जुड़े होते हैं और उनके संघर्ष हमारे दैनिक जीवन के यथार्थ को सामने लाते हैं। यह शोधपत्र इस तथ्य को प्रमाणित करता है कि प्रेमचंद सामाजिक यथार्थ को साहित्य के माध्यम से जीवंत कर देते हैं। प्रेमचंद की कहानियाँ न केवल साहित्यिक उत्कृष्टता का उदाहरण हैं, बल्कि वे समाज की गहराइयों में छिपे यथार्थ को भी सामने लाती हैं। इस शोध में विशेष रूप से पंच परमे वर, ईदगाह, बड़े घर की बेटी और कफ़न जैसी कहानियों को केंद्र में रखा गया है। पंच परमे वर में प्रेमचंद ने न्याय व्यवस्था और अंतरात्मा की पुकार को दर्शाया है, जहाँ मित्रता और नैतिकता के द्वंद्व में अंततः निष्पक्ष निर्णय को प्राथमिकता दी जाती है। यह कहानी ग्रामीण पंचायत की भूमिका और न्याय के आदर्शों को उजागर करती है। ईदगाह एक संवेदनशील बाल मनोविज्ञान का चित्रण है, जिसमें पारिवारिक त्याग की भावना मुखर होती है। हामिद का अपनी दादी के लिए चिमटा खरीदना न केवल करुणा का प्रतीक है, बल्कि बालक की परिपक्व सोच और सामाजिक मूल्यों की झलक भी देता है। बड़े घर की बेटी में प्रेमचंद ने स्त्री चेतना और पारिवारिक प्रतिष्ठा को विषय बनाया है। यह कहानी पारिवारिक संबंधों, मान–सम्मान और नारी की गरिमा को दर्शाती है, जहाँ एक बहू अपने संयम और समझदारी से बिखरे संबंधों को पुनः जोड़ती है। कफ़न कहानी सामाजिक विडंबना, गरीबी और नैतिक पतन की पराकाष्ठा को प्रस्तुत करती है। इसमें दो पात्रों की असंवेदनशीलता और निष्क्रियता समाज की अमानवीयता पर गंभीर प्रश्न उठाती है। इन चारों कहानियों के माध्यम से प्रेमचंद ने सामाजिक यथार्थ के विविध पहलुओं को प्रभावशाली ढंग से चित्रित किया है, जो आज भी उतने ही महत्वपूर्ण और प्रासंगिक हैं।

संदर्भ सूची

1. शर्मा, रा. (1952) प्रेमचन्द और उनका युग. मेहरचन्द मुन्शीराम, दिल्ली. मुद्रकरू नैशनल प्रिंटिंग वर्क्स. https://ia601407.us.archive.org/35/items/in.ernet.dli.2015.484112/2015.484112.Prem-Chand.pdf
2. शर्मा, रा. (2008). प्रेमचंद और उनका युग. नई दिल्लीरू राजकमल प्रकाशन (ISBN 978–81–267–0505–4).
3. श्रीवास्तव रा. कु. (2025). नवाब राय बनारसी कैसे बन गए मुंशी प्रेमचंद ?. सत्य हिंदी पत्रिका. https://www.satyahindi.com/literature/legendry-writer-munshi-premchand-jayanti-140925.html
4. प्रेमचंद, मुं. (2022). मानसरोवर (खंड 1–8). अभिषेक प्रकाशन ISBN 978–9394879249).
5. रॉय, अ. (1997). पंच परमे वर (मूल लेखन प्रेमचंद, मुं.. पंच परमे वर का चित्रांकन). कथा, नई दिल्ली (ISBN 978-81-85586-64-9). https://learn.katha.org/pluginfile.php/1735/mod_resource/content/3/06_panch%20parmeshwar.pdf
6. कृष्णमूर्ति, एस. के., – शर्मा, दि. कु. (2018). प्रेमचंद के साहित्य में सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना. अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिका https://euroasiapub.org/wp-content/uploads/IJRESS35May18KrishnaWS.pdf
7. कृष्णकांत (2019). मुंशी प्रेमचंद जन्मदिन विशेषः हिंदी साहित्य का पहला प्रगतिशील. दी प्रिंट. https://hindi.theprint.in/culture/premchand-birth-anniversary-hindi-literature-sahitya/34064/
8. लता, कु. (2019). प्रेमचंद की कहानियों में दलित चेतना. श्रृंखला एक शोधपरक वैचारिक पत्रिका, 6(10). H-80-H-83. http://www.socialresearchfoundation.com/upoadreserchpapers/3/282/1909241255071st%20kusumlata.pdf
9. नीलम और मधुबाला. (2019). हिंदी साहित्य में प्रेमचंद का योगदान. Cosmos: An International Journal of Art & Higher Education, 8(1), 89–91. https://cosmosjournals.com/wp-content/uploads/2021/05/CAHE-JJ19-Neelam.pdf

10. दास, भ. (2020). प्रेमचंद की कहानियों में संवेदना तत्त्व. साहित्य कुञ्ज. https://sahityakunj.net//entries/view/premchand-ki-kahaniyon-mein-samvedana-tatv
11. पारिक, पी. के. (2022). प्रेमचन्द की कहानियाँ और यथार्थवाद. IJEMMASSS] 4(3) 210-213. https://www.inspirajournals.com/uploads/Issues/1863604672.pdf